

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील

हायर सेकेंडरी परीक्षा



1. विषय कोड **002** परीक्षा का विषय **हिन्दी**
 2. परीक्षा का माध्यम **हिन्दी** परीक्षा की दिनांक **12/3/09**

केन्द्र क्रमांक की सील

771001

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट **A, B, C, या D**) अनिवार्यतः भरें कोड सेट **2001 B**

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में **X** अंकों में **X**
 ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्षा क्रमांक **88** में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक **K 1479792**

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)
2 9 7 7 1 5 4 1 1

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो नौ सात सात एक पाँच नार एक एक

**B
S
E
M
P**

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

S. Sanyal

नाम

S. Sanyal

पता/संस्था

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
1								
2								
3				7				
4				5				
5				0				
6				2				
7				4				
8				5				
9				5				
10				5				
कुल प्राप्तांक								

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय सहा पाई गई है। हालांकि स्टीकर चरपा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

B. S.

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक

9350158

दिनांक.....

दिनांक.....

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
 2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-
- | | | | | | | | | |
|----|----|----|-----|-----|----|------|---|----|
| 1 | 8 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
| एक | आठ | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छ | आठ |
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रॉस किया जाए।
 4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

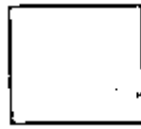
परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

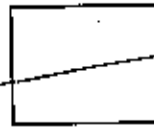
मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौंपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

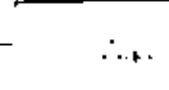
3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक

उत्तर - 1

- 7-1901
- (i) श्रीरावदाई कृष्ण भास्कर शास्त्री ✓
 - (ii) गणेशजी ✓
 - (iii) कबीर ✓
 - (iv) श्री कृष्ण ✓
 - (v) सुरदास ✓

उत्तर - 2

- (i) भय में ✓
- (ii) बलती और बहू की ✓
- (iii) बिजनौर से ✓
- (iv) पेशेवर अध्ययन ✓
- (v) बचपन के अनुभव ✓

उत्तर 3

- (i) असत्य ✓
- (ii) असत्य ✓
- (iii) असत्य ✓
- (iv) असत्य ✓
- (v) सत्य ✓

B
S
E
M
P

पृष्ठ 2 का अंक



उत्तर - 4

- (i) केशवदास ✓
- (ii) पश्चिमी देश ✓
- (iii) विष्णु कान्त शास्त्री ✓
- (iv) बीर ✓
- (v) सुखी डाली ✓

उत्तर - 5

- (i) डॉ श्यामसुन्दर दुबे ✓
- (ii) ब्रज भाषा ✓
- (iii) रेल की पटरियों की खटखटाहट ✓
- (iv) गाँधी जी ने ✓
- (v) बवालें ने ✓

उत्तर - 6

कबीर ने कहा है कि संसार में शब्द की बड़ी महीमा है। शब्द के हाथ और पाँव दोनों नहीं होते। हमारी जीभ से निकला शब्द कभी वापस नहीं आता। हमारे मुख से निकला एक शब्द किसी के लिये औषधी का कार्य करता है तो किसी के लिये पाँव का। अतः हमें शब्द सोच विचार कर

B
S
E
M
P

14

पृष्ठ के अंकों का योग

4



बिनात्मना चाहिये।

उत्तर-7.

जगति के इस मधुवन में फूल और मालिन मधु-वर्षण करके मुरझा जायेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन एक ना एक दिन समाप्त हो ही जाता है। फिर चाहे वह फूल हो या मालिन (जीवन) इन दोनों की प्रकृति एक समान होती है।

पक्षग श्लो

उत्तर-8

रहस्यवाद का अर्थ होता है "द्विपाहुआ" इस संसार का सबसे बड़ा रहस्य वह परमात्मा है।

"चिन्मन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है वही काव्य के क्षेत्र में रहस्यवाद है।"

रहस्यवादी कविता की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं।

1. प्रेम की अभिव्यंजना
2. आध्यात्मिक तत्वों की प्रधानता
3. परमेश्वर सत्ता के प्रति आराधना
4. ईश्वर एक है कि मान्यता (अद्वैत का अर्थ अद्वितीय (इसका))
5. रहस्यवादी कवियों की अभिव्यंजना

7

6

यां



उत्तर - 9

हिन्दी में उपन्यास सम्राट "प्रेमचन्द" को कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास के शुक्ल युग में प्रेमचन्द ने उपन्यास और नाटक दोनों की जो रचना की है। वह सराहनीय है।

प्रेमचन्द के दो उपन्यास निम्न लिखित हैं:

1. गोदान
2. गधन
3. सेवासदन

उत्तर - 10

ताप पिघलना का अर्थ होता है - विरह-जन्य दुःख कम होना। विरह का ताप कभी कम ~~कर~~ नहीं होता। विरहणी हिमालय की ढ़ड़ी ढ़ाँह में रहे या राजस्थान या मरुस्थल की तली रेत में, विरह का दुःख तो बढ़ता ही चला जाता है। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि ताप कम हो गया है पर वास्तव में होता नहीं है। लड़मण के जाने पर विरहणी उर्मिला को भी ऐसा ही प्रतीत होता है अतः हिमालय की ढ़ड़ी ढ़ाँह में भी यशोधरा का ताप नहीं पिघलता है।

B
S
E
M
P

5

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर - 811

सूर्य सदैव पूर्व से उगता है और पश्चिम में अस्त होता है। अर्थात् सूर्य की नौजवान सूर्य रौशनी का अंत पश्चिम की ओर होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज हमारे देश के नौजवान अपने देश की सभ्यता संस्कृति को भूलकर पश्चिमी सभ्यता को अपना रहे हैं। जिससे हमारे देश की पूर्व की सभ्यता का ह्रास हो रहा है। अर्थात् हमारे देश के नौजवान पूर्व की सौगन्ध जन्म वायु छोड़कर पश्चिम की प्रदूषित वायु की ओर बढ़ रहे हैं। जो पूर्णतः अंधकार का प्रतीक है। इसे ही कवि ने "आध्यात्मिक अंधकार" कहा है।

उत्तर - 12

शान्त का स्थायी भाव होता है "निर्वेद" अर्थात् जब निर्वेद नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव तथा स्मयारी भाव से संयुक्त होता है तब शान्त रस की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण :-

"मन रे ! परस हरि के चरण

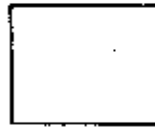
सुभग शीतल लज्जल कीमल

त्रिविध ज्वाला हरण ॥

8

योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 8 के अंक

=



कुल अंक



उत्तर - 14

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म 11 अक्टूबर 1884 में हुआ था। इनके पिता का नाम चन्द्र बालि शुक्ल था। इन्होंने अपनी शिक्षा बी. एफ. तक ही की और जीविका उपाजनि हेतु मिर्जापुर बिरबविद्यालय में इरॉग के शिक्षण का कार्य करने लगे। इनकी मृत्यु 1620 में हुई थी।

एवनाएँ → अजीबा में जन्मे इस ~~एवनाएँ~~ ने अनेक एवनाएँ कि है।

विन्तामणी, त्रिवेणी, विचार विधी इन्की प्रमुख एवनाएँ हैं।

भाषाशैली → डॉ रामचन्द्र शुक्ल की भाषा अत्यंत प्रीट प्रांजल व परिष्कृत है।

भाषा में गंभीरता है। इनके लेखक की गंभीरता अद्वितीय है। भाषा में शब्दाङ्कुर व्यर्थ ही नहीं आये हैं बल्कि भाव व अर्थ के अनुरूप प्रयोग किये हैं। भाषा में सौष्ठव है। इनके लेखन के पद अत्यंत लम्बे हैं। कहीं-कहीं भाषा में दुखदता भी आ गई है।

B
S
E
M
P



P
M
E
S
B

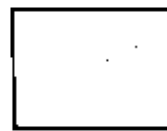
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।

श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।

श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।

श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
 श्री कृष्णाय नमः । श्री कृष्णाय नमः ।





उत्तर- 15

"सूरदास"

सूरदास के जन्म के सम्बन्ध में विद्वानों का एक मत नहीं है। कुछ विद्वान सूरदास का जन्म दिल्ली के सिंही नामक ग्राम में सन् 1478 में बताते हैं। सूरदास जन्मान्ध थे। एक किंवदन्ती के अनुसार सूरदास जन्मान्ध नहीं थे बल्कि इन्हें किसी कन्या से प्रेम ही ठापा था। जिसके ब मिलने पर इन्होंने अपनी आँखें फोड़ दीं। इनकी मृत्यु 1583 में हुई थी।

रचनाएँ → सूरदास की निम्न तीन रचनाएँ प्रमुख हैं।

सूरसागर, सूरसाशवली, साहित्य लहरी।

सूरसागर → सूरसागर इनकी अमर कृति है इसमें 6 या सात हजार दोहे हैं।

भावपक्ष → सूरदास के काल्य में अनेक गुण देखने को मिलते हैं।

अद्वितीय बाल्य → सूरदास को बाल्य का सम्राट कहा जाता है। यह बाल्य के चिह्न हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में जो कृष्ण का बाल



रूपी बखानव बंगेया है। श्री कृष्ण की छिटाएँ, कौतूहल
माता-पिता से शादी की जिद करना & तथा
चांद की देखकर उसे बाँगना आदि। इनके
इस वात्सल्य की दृष्टा देखकर अनन्य कवि
इनके जन्मान्ध होने का संदेह करते हैं।
इनके वात्सल्य की एक झलक निम्न है।

“भैया कबही बढेगी यह चोड़ी

कितनी बार मोही दूध पियत आई, यह अजूही है छोरी।

शृंगार परक → सूरदास के काव्य में शृंगार रस
का प्रयोग भी सराहनीय है।

कृष्ण और राधा के प्रेम को इन्होंने अनूठा
स्थान दे दिया है।

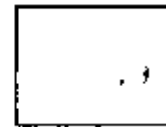
भक्तिवाद → सूरदास श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे।
इन्होंने अपने प्रत्येक काव्य में श्री
कृष्ण का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया है।

कलापद्ध → सूरदास का कलापद्ध भी अत्यंत सुन्दर है।
जो निम्न प्रणार से है।

भाषा → सूरदास ने ब्रज भाषा का ही प्रयोग
किया है। इन्होंने अपनी भाषा को

सोनों के समझने योग्य बतलाया है। इनकी रचित
रचनाओं में भाषा की महिमा उसे पढ़ने मात्र से
समझ आती है।

शैली → सूरदास ने अपनी रचनायें गेय पद शैली
में लिखी हैं।



अलंकार → सूश्यास ने अपनी कविता में अलंकारों का प्रयोग नहीं किया है यह तो स्वयं ही इनके रचनाओं में आ गये हैं। इनकी रचनाओं में उपमा, रूपक, उल्लेख आदि अलंकार दिखाई देते हैं।

साहित्य में स्थान → सूश्यास का साहित्य में स्थान अद्वितीय है वात्सल्य रस के सम्राट कहे जाने वाले इस कवि ने लोक भाविकात्मक की सुन्दरता प्रधान कर दी निरस्मरणीय स्थान रखने वाले इस कवि के बारे में जितना भी कहा जाये उतना कम है। इनका स्थान मैं इस एक वाक्य द्वारा बतावा चाहूंगी।

"सूर-सूर कुसुमी सासि उडगन के रावदास"

उत्तर- 16

उत्तर - - - - - तक रहता है।
 सन्दर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक ~~का~~ स्वाति के "भय" नामक निबन्ध से लिया गया है। जिसके लेखक "आचार्य रामचन्द्र शुक्ली" हैं।

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भ्रम के
 लक्षणों को बताया है। तथा इन
 दोनों में भ्रम का स्मरण कराया है।

व्याख्या → लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि
 जब किसी व्यक्ति में आपत्ति के आने
 का आबिगर्ण मनीबिकार होता है तब वह भ्रम
 कहलाता है किन्तु जब किसी व्यक्ति के मन में
 भ्रम छ कि किसी मुसीबत के आने की सम्भावना
 मात्र से जो आबिगर्ण मनीबिकार उत्पन्न
 होता है उसे "आशंका" कहते हैं। जब इन्सान आशंका
 से ग्रस्त होता है तो उसे उस आशंका का
 कोई प्रभाव पड़ना दिखाई नहीं देता वह अपने
 कार्यों को जारी रखते हुए आगे बढ़ता है।
 आशंका में व्यक्ति को इससे बाहर जाने की
 जन्धी नहीं होती है क्योंकि यह केवल सम्भावना
 होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल दोनों में भ्रम
 बताते हुए कहते हैं। कि आशंका का स्मरण कुछ
 घीमा होता है जबकि भ्रम का स्मरण तीव्र होता
 है। किन्तु आशंका लम्बे समय तक बनी रहती है।

विवेक → 1. आशंका की प्रकृति की विवेचना है।

2. भ्रम और आशंका में अन्तर व्यक्त किया
 गया है।

3. आशंका की प्रभावों का वर्णन किया गया है।



उत्तर-1+ (ब)

दूक-दूक - - - - - बसावों ना।
 सन्दर्भ -> प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक
 स्वाति के उद्धव-प्रसंग से लिया
 गया है जिसके कवि "जगन्नाथ रत्नाकर" हैं।

प्रसंग -> प्रस्तुत पद्यांश में विरह जन्य गोपियों
 अपने मन के विरह का बखान करके
 उद्धव से योग की बातों के कठोर पत्थर
 न बारने की कहती हैं।

व्याख्या -> प्रस्तुत पद्यांश में जब उद्धव गोपियों
 से योग की कठोर बातें कहता है
 तब गोपियाँ श्री क उद्धव से कहती हैं कि
 हमारा मन पहले से ही बहुत दुर्गम है।
 अब आप इसे अपने कठोर पत्थर
 चलाकर और मन दुर्गमसे और दुकड़े-दुकड़े
 मन विजिये। एक कृष्ण ने तो मन में
 बसकर हमारा सब कुछ ले लिया। अब
 आप इस मन में अनेक कृष्ण मन बसाइये।
 इन अनेक कृष्ण के बस जाने से हम
 विरह खपी दुःख को सहन नहीं कर पायेंगे।

विशेष -> गोपियों के मन की दशा को बताया गया है।
 उद्धव से योग की बातें न कहने की
 धारिणा की गई है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ सं. 14



उत्तर- 18

(i) उपयुक्त अध्याय का शीर्षक "मन की महीना"

(ii) जब मनुष्य धर्म का पालन करता है तब उसकी सबसे बड़ी बाधा उसका अपना मन होता है। मनुष्य के कर्तव्य क्षिति में भी उसका मन बाधा बनता है। यदि उसका मन पक्का होता है तो वह अपने कार्य को करने में लग्न हो जाता है। और यदि उसका मन उसे आशा ना देती तो वह केवल अपने स्वार्थी क्षिति में ही ध्यान देता है।

(iii) धर्म पालन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा वित्त की नग्नता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है।



B
S
E
M
P

सेवा में

जिला कलेक्टर,
सिवनी (म.प्र.)

विषय → दृबनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर प्रतिबंध
लगाने हेतु

महोदय जी,

सन्मत्त निवेदन है कि व्याध्यामिक शिक्षा
मण्डल की परीक्षा परीक्षा का समय न्यूनदीक
आ रहा है। हम सभी छात्र-छात्राये अपने
अध्ययन में व्यस्त हैं। किन्तु अनेक धार्मिक
पर्व व विवाह आदि के कारण कुछ लोग
दृबनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग देर रात
तक कर रहे हैं जिससे हमारे अध्ययन में
व्यवधान उत्पन्न हो रहा है इससे पहले इसी
सम्बन्ध में महर्षि विद्यालय के छात्रों ने भी
आपकी पत्र लिखा था।

आशा है आप हमारे अविषय की
ध्यान में रखते हुए दृबनि विस्तारक यंत्रों पर
प्रतिबंध लगाने की आज्ञा देंगी।

धन्यवाद

दिनांक

12/3/09

प्रार्थी

छात्र-छात्राये

मिशान इ. हा. सी. स्कूल सिवनी



उत्तर - (5 (ब))

(अ) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार लिखो-

(i) जब सूर्योदय होता है तब पक्षी चहकते हैं।

(ii) वह गरीब है किन्तु ईमानदार है।

(ब) आज देश में भ्रष्टाचार, बेसीमानी, ज़मानबोरी बहुत बढ़ गई है। ईमानदारी की खोज देखने की भी नहीं मिलती है। किन्तु जो सुख ईमानदारी की सखी रोटी में मिलता है वह बेइमानी के कबाब में भी नहीं मिलता है। जो व्यक्ति स्वावलम्बी होते हैं उन्हें ना तो सोना-चांदी चाहिए रहता है और ना ही धन दौलत फिर भी स्वावलम्बी व्यक्तियों को यह सबकुछ अपने आप ही मिल जाता है। इसलिये कहा गया है कि "स्वावलम्बन की एक खोज पर कुबन कुबेर का कोष"

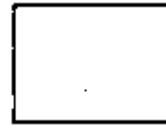
18



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



उत्तर- 20

प्रदूषण : कारण और निदान

स्वपरिष्कार → 1. प्रस्तावना

2. प्रदूषण का अर्थ

3. प्रदूषण के प्रकार

4. प्रदूषण के कारण

5. निदान

6. उपसंहार

“साँस लेना भी मुश्किल हो गया
बालावरण इतना प्रदूषित हो गया”

प्रस्तावना → प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो केवल भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की समस्या बनती जा रही है। प्रदूषण से बालावरण इतना प्रदूषित होता जा रहा है कि कोई वस्तु उपयोग देवू नहीं रही।

प्रदूषण का अर्थ → जब प्राकृतिक वस्तुओं में अवांछित हानिकारक पदार्थ मिल जाते हैं तो यही प्रदूषण कहलाता है।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंक का योग

19



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 19 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P

प्रदूषण के प्रकार → प्रदूषण के कई प्रकार होते हैं।
जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, रेडियो
धर्मी प्रदूषण, श्रुदा प्रदूषण, रसायनिक प्रदूषण
इत्यादि

जल प्रदूषण → "जल ही जीवन है" जब हम जीवन
रूपी जल में अवांछनीय तत्व मिल
जाते हैं जैसे श्रुदा, कारखानों का जल, मल-
मूत्र आदि तब इसे जल प्रदूषण कहते हैं।

इस प्रदूषण से जल ~~किसी~~ किसी उपयोग का
नहीं रहता।

वायु प्रदूषण → जिस स्वस्थ में वायु में हम
साँस ले रहे हैं यदि हममें हानि-
कारक गैसों का मिश्रण हो जाता है तब इसे
ही वायु प्रदूषण कहते हैं। वायु प्रदूषण अत्यंत
घातक सिद्ध हो सकता है। क्योंकि हमारे जीवन
के लिये आवश्यकता होती है।

श्रुदा प्रदूषण → जब इस श्रुदा में अवांछनीय तत्व
तथा गंदे रसायनिक पदार्थ मिल
जाते हैं तब ही यह श्रुदा प्रदूषण कहलाता है।
इस प्रदूषण से श्रुदा की उर्वरक शक्ति कम हो
जाती है।

दूधनि प्रदूषण → अवांछित आवाज या शोर को
दूधनि प्रदूषण कहा जाता है यह
भी मानव के लिये घातक सिद्ध हो सकता है
इससे मानव के सुनने की क्षमता क्षीण
हो जाती है।



पृष्ठ के अंकों का योग

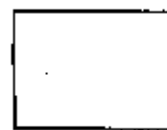
20



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक



4. प्रदूषण के कारण → इस प्रश्न के अनेक कारण होते हैं।

1. जल प्रदूषण → कारखानों का गंदा बानी नदियों तालाबों में बहाया जाता है।

2. बास्तियों में रहने वाले लोग नदियों के किनारे ही मलमूत्र आदि छिपाए कर रहे हैं।

3. जल में मृत शव बहा दिया जाता है।

2. वायु प्रदूषण → कारखानों से निकलने वाली गैसों वायुमंडल में छोड़ी जा रही हैं।

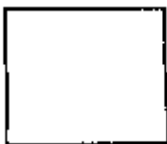
2. वाहनों के सर्वाधिक प्रयोग से निकलने वाली गैस वातावरण को प्रदूषित कर रही हैं।

3. जलाकू विद्युत के प्रयोग से भी वायु प्रदूषित हो रही है।

63. मृदा प्रदूषण → मृदा में रसायनिक पदार्थ मिलाये जा रहे हैं।

2. मृदा में दवाइयों का प्रयोग भी मृदा प्रदूषण का कारण है।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

21



+



=



योग पूर्व द-उ

पृष्ठ 21 के अंक

कुल अंक



प्रदूषण के परिणाम \rightarrow ~~कृषि~~ प्रदूषण के परिणाम मानव

पशु-पक्षी व सभी जीव

जन्तुओं के लिये घातक सिद्ध हो रहे हैं।

1. मानव के प्रयोग हेतु जल का अभाव
2. पीने हेतु जल का अभाव
3. साँस लेने में शुद्ध वायु की कमी
4. सृष्टि प्रदूषण से अन्य उपज में कठिनाई हो रही है।
5. दूषित प्रदूषण से मानव के सुनने की शक्ति कम हो जाती है।

प्रदूषण के निदान \rightarrow प्रदूषण के कारण व ^{नियंत्रण दोनो} ~~परिणाम~~

बहुत हैं इसको लिये निम्न

कदम उठाये जा सकते हैं।

1. पृथ्वी सौपण
2. कारखानों का जल नदियों की बजाय कहीं और छोड़ा जाये।
3. कारखानों की वायु, वायुमण्डल में ना छोड़ी जाये।
4. सृष्टि में स्थायिक पदार्थ की जगह खाद पदार्थ का उपयोग किया जाये।
5. दूषित विस्तारक यंत्रों का भी कम प्रयोग किया जाये।
6. नदियों में कपडे धोना, नहाना, तथा पशुओं की भी नहीं नहलाना चाहिये।

B
S
E
M
P



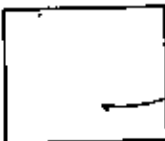
पृष्ठ के अंकों का योग



असंहार > प्रहृषण को कम करना आज हमारे
 लिये बहुत आवश्यक हो गया गया
 है। इसके लिये हमें भी अपना समर्थन
 देना चाहिये। अधिक से अधिक
 वृद्ध लगाकर देश की प्रगति में अपना
 योगदान देना चाहिये।

"स्वच्छ वातावरण स्वच्छ जीवन"

B
S
E
M
P



23

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

24



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग